

भारत का स्वतंत्रता आंदोलन सही मायने में मास आंदोलन तब बना जब महात्मा गांधी साउथ अफ्रीका से लौटे और आंदोलन की कमान संभाली। साउथ अफ्रीका में आजमाए सत्याग्रह का गांधीजी ने यहां भी बखूबी प्रयोग किया।

भारत का स्वतंत्रता आंदोलन सही मायने में मास आंदोलन तब बना जब महात्मा गांधी साउथ अफ्रीका से लौटे और आंदोलन की कमान संभाली। साउथ अफ्रीका में आजमाए सत्याग्रह का गांधीजी ने यहां भी बखूबी प्रयोग किया। 1857 की महान क्रांति पर काबू पा लेने वाली अंग्रेजी सरकार गांधीजी के अहिंसक आंदोलन के सामने पस्त नजर आने लगी। इसका कारण था कि कांग्रेस जो पहले सिर्फ एलीट क्लास का संगठन थी, उससे बड़े पैमाने पर आम भारतीय नागरिक जुड़ने लगे। लोगों को लगने लगा कि कांग्रेस द्वारा चला जा रहा आंदोलन उनके हित में है।

### रॉलेट ऐक्ट को विरोध

देश में बह रही परिवर्तन की हवा को दबाने के लिए 1919 में रॉलेट ऐक्ट लाया गया। रॉलेट ऐक्ट को काले कानून के नाम से भी जाना जाता है। इस कानून में वायसरॉय को प्रेस को नियंत्रित करने, किसी भी समय किसी भी राजनीतिज्ञ को अरेस्ट करने के साथ-साथ बिना वॉरंट किसी को भी गिरफ्तार करने का अधिकार देने का प्रावधान था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में पूरे देश में इसका विरोध किया गया।

### असहयोग आंदोलन

पहली अगस्त 1920 से शुरू हुए इस आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार के दांत खट्टे कर दिए। देश स्तर पर होने वाला यह पहला आंदोलन था। इसके पहले जितने भी आंदोलन थे, वे देश के किसी न किसी भाग तक सीमित थे, लेकिन असहयोग आंदोलन ऐसा आंदोलन था जिसमें पूरे देश की जनता ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। ब्रिटिश सरकार समझौते के लिए तैयार हो ही रही थी कि चौरी चौरा कांड हो गया और गांधीजी ने आंदोलन वापस ले लिया।

### दांडी मार्च

12 मार्च 1930 को साबरमती से अपने 78 सहयोगियों के साथ गांधीजी ने दांडी यात्रा शुरू की। 240 मील लंबी यात्रा में हजारों लोग शामिल होते गए। गांधीजी ने दांडी पहुंचकर नमक कानून तोड़ा। इस नमक कानून के बारे में उन्होंने कहा था कि पानी से पृथक नमक नाम की कोई चीज नहीं है जिस पर कर लगाकर राज्य करोड़ों को भूख से मार सकती है, बीमार असहाय और विकलांगों को पीड़ित कर सकती है। इसलिए यह कर अत्यंत अमानवीय है, अविवेकपूर्ण है।

### **सविनय अवज्ञा आंदोलन**

गांधीजी ने 3 बार यह आंदोलन छेड़ा। पहली बार यह आंदोलन 1930 में नमक कानून को तोड़कर प्रारंभ किया गया। गांधीजी ने यह आंदोलन अप्रैल 1934 में वापस ले लिया। सिविल नाफरमानी की ताकत को समझाते हुए गांधीजी ने कहा था- मान लें कि भारत के 7 लाख गांवों में से हर एक से 10 व्यक्ति सत्याग्रह में भाग लेकर नमक कानून तोड़ते हैं, वैसी स्थिति में आपके विचार में यह सरकार क्या कर सकती है

### **भारत छोड़ो आंदोलन**

यह आंदोलन ऐसा आंदोलन था, जिसने ब्रिटिश सरकार की चूल्में हिला दी। इस आंदोलन की खासियत यह थी कि जगह-जगह इसकी बागडोर स्थानीय नेताओं ने थामी और आंदोलन का नेतृत्व किया, क्योंकि आंदोलन शुरू होते ही ब्रिटिश सरकार ने सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। गांधीजी ने 'करो या मरो' का नारा दिया। यह आंदोलन 9 अगस्त, 1942 को शुरू हुआ था।